ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय- व्याकरण

दिनांक—18/10/2020 अलंकार(पुनरावृत्ति)

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

शब्दालंकार के भेद:

अनुप्रास अलंकार

जहाँ एक ही व्यंजन वर्ण एक से अधिक बार आवृति आए, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

- **कालिंदी कूल कदम्ब की डारन।**
~~~~~~~~~~

- **कायर क्रूर कपूत कुचली यूँ ही मर जाते हैं।**

2. **यमक अलंकार**

जिस प्रकार अनुप्रास अलंकार में किसी एक वर्ण की आवृति होती है उसी प्रकार यमक अलंकार में काव्य का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए एक शब्द की बार-बार आवृति होती है। दो बार प्रयोग किए गए शब्द का अर्थ अलग हो सकता है । **जैसे:**

- **काली घटा का घमंड घटा।**
- यहाँ 'घटा' शब्द की आवृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थ में हुई है। पहले 'घटा' शब्द 'वर्षाकाल' में उड़ने वाली 'मेघमाला' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और दूसरी बार 'घटा' का अर्थ है 'कम हुआ'। अतः यहाँ यमक अलंकार है।
- **कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। या खाए बौरात नर या पा बौराय।।**

इस पद्य में **'कनक'** शब्द का प्रयोग दो बार हुआ है। प्रथम कनक का अर्थ **'सोना'** और दूसरे कनक का अर्थ **'धतूरा'** है। अतः **'कनक'** शब्द का दो बार प्रयोग और भिन्नार्थ के कारण उक्त पंक्तियों में यमक अलंकार की छटा दिखती है।

- **माला फेरत जग गया, फिरा न मन का फेर। कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।**

ऊपर दिए गए पद्य में **'मनका'** शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। पहली बार **'मनका'** का आशय माला के मोती से है और दूसरी बार **'मनका'** से आशय है मन की भावनाओं से।

अतः **'मनका'** शब्द का दो बार प्रयोग और भिन्नार्थ के कारण उक्त पंक्तियों में यमक अलंकार की छटा दिखती है।

3. श्लेष अलंकार

श्लेष अलंकार ऊपर दिये गए दोनों अलंकारों से भिन्न है । श्लेष अलंकार में एक ही शब्द के विभिन्न अर्थ होते हैं। **जैसे:**

- **रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून।**

इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं।पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने

व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका मूल्यह्रास होता है। अतः यह उदाहरण श्लेष के अंतर्गत आएगा।

- **जे रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।बारे उजियारो करै, बढ़े अंघेरो होय।**

रहीम जी ने दोहे के द्वारा दीये एवं कुपुत्र के चरित्र को एक जैसा दर्शाने की कोशिश की है। रहीम जी कहते हैं कि शुरू में दोनों ही उजाला करते हैं लेकिन बढ़ने पर अन्धेरा हो जाता है।

यहाँ बढे शब्द से दो विभिन्न अर्थ निकल रहे हैं। दीपक के सन्दर्भ में बढ़ने का मतलब है बुझ जाना जिससे अन्धेरा हो जाता है। कुपुत्र के सन्दर्भ में बढ़ने से मतलब है बड़ा हो जाना।

बड़े होने पर कुपुत्र कुकर्म करता है जिससे परिवार में अँधेरा छा जाता है।

छात्र कार्य-प्रस्तुत पाठ्य सामग्री को याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”